अध्याय 13

मराठा राज्य और संघ

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- मराठा साम्राज्य का उदय और विस्तार कैसे हुआ और यह साम्राज्य धीरे-धीरे दक्षिणी भारत में अपनी स्थिति कैसे मजबूत कर पाया।
- मराठा साम्राज्य की केन्द्रीय, प्रांतीय, सैन्य शासन, भू-राजस्व प्रणाली कैसी थी और शिवाजी के उत्तरधिकारियों ने कौन से विशेष कार्य किए।
- पेशवाओं के काल में मराठा शक्ति का उत्कर्ष कैसे और किन परिस्थितियों में शीर्ष ऊँचाईयों तक पहुँचा।

मराठा शक्ति का उत्कर्ष (Maratha Empire)

मराठों का उत्कर्ष देवगिरि के यादवों के अधीन हुआ, इस राज्य के पतन के बाद वे बहमनी राज्य की सेवा में चले गए। मराठे वीरता, साहस और सैनिक गुणों से परिपूर्ण थे, जिन्होंने उनकी राजनीतिक उत्कर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इसके साथ ही महाराष्ट्र की भौगोलिक स्थिति ने मराठों को विशेष सुरक्षा तथा युद्ध की छापामार पद्धति के विकास में विशेष योगदान दिया। भक्ति आन्दोलन तथा धर्म सुधार आन्दोलन के सन्तों—ज्ञानेश्वर, एकनाथ, तुकाराम, रामदास आदि सन्तों ने मराठा क्षेत्रवाद तथा राष्ट्रवाद की भावना को उभारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

शिवाजी (1627–1680 ई.)

इनका जन्म शिवनेर के किले में अप्रैल, 1627 में हुआ था। इनकी माता का नाम जीजाबाई (देवगिरि के जागीरदार यादवराय की पुत्री) तथा पिता का नाम शाहजी भोंसले था। शाहजी भोंसले ने अपना जीवन अहमदनगर के सुल्तान के यहाँ एक सैनिक के रूप में शुरू किया और कालान्तर में अपनी योग्यता के बल पर पूना में जागीर प्राप्त कर ली।

इन्होंने अपने पुत्र का नाम शिवाजी रखा था। दादाजी कोण्डदेव शिवाजी के संरक्षक थे, जो पूना स्थित शाहजी की जागीर की देखभाल करते थे। शिवाजी पर धरकरी सम्प्रदाय से सम्बन्धित समर्थ गुरू रामदास का अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

शिवाजी के प्रारंभिक अभियान

शिवाजी ने 1643 ई. में सिंहगढ़ दुर्ग पर अधिकार कर लिया। सिंहगढ़ उस समय बीजापुर के अधिकार में थी इसके अतिरिक्त शिवाजी ने चाकन, पुरन्दर, सूपा, जावली आदि दुर्गों पर भी अधिकार कर लिया। 1645-47 ई. में शिवाजी द्वारा बीजापुर के महत्वपूर्ण दुर्गों रायगढ़, तोरण, गुरूम्बगढ़ तथा 1647 ई. में कोण्डाना पर अधिकार करने के परिणामस्वरूप बीजापुर के सुल्तान ने 1648 ई. में शाहजी को कैद कर लिया। अत: पिता की रिहाई के लिए शिवाजी को कोण्डाना का दुर्ग वापस करना पड़ा। 1664 ई. में इन्होंने पुरन्दर का किला नीलोजी नीलकण्ठ से जीता तथा 1656 ई. में चन्द्रराव मोरे से जावली का किला जीता।

शिवाजी ने अप्रैल, 1656 में रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया। 1657 ई. में अहमदनगर तथा जुन्नार पर आक्रमण के समय इन्होंने पहली बार मुगलों (औरंगज़ेब) का सामना किया।

बीजापुर से संघर्ष

शिवाजी की सफलताओं से नाराज होकर बीजापुर ने अपने सरदार अफजल खाँ को सितम्बर, 1659 में उनके विरुद्ध कार्यवाही करने भेजा।

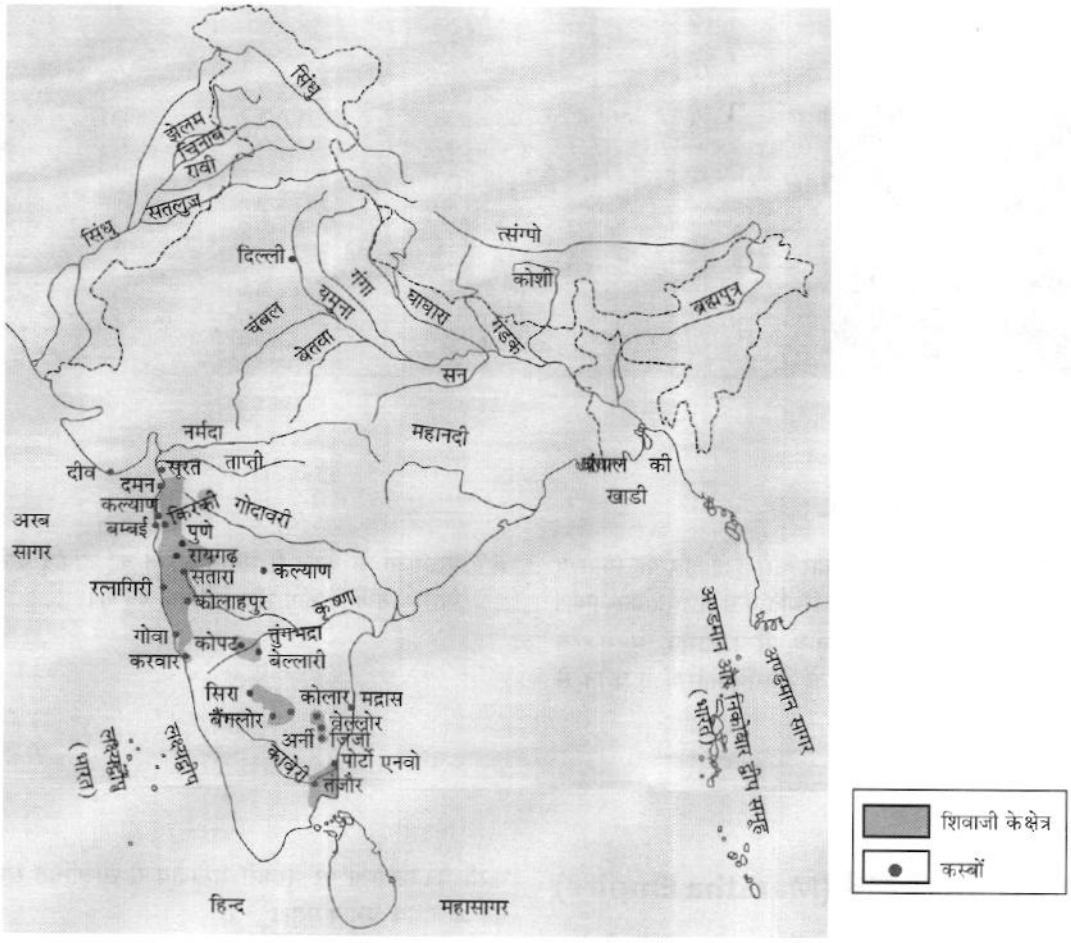

चित्र 13.1: शिवाजी का साम्राज्य 1680 ई.

अफजल खाँ ने कूटनीति के सहारे शिवाजी को दुर्ग से निकालकर हत्या करने की योजना बनाई। अफजल खाँ के दूत कृष्णा जी भास्कर द्वारा शिवाजी को अफजल खाँ के षड्यंत्र का पता चला। फलतः इन्होंने अफजल खाँ को उसी की भाषा में जवाब देने का निर्णय किया और अफजल खाँ का वध कर दिया।

शिवाजी और मुगल

मराठों के बढ़ते प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए औरंगज़ेब ने 1660 ई. में अपने मामा शाइस्ता खाँ को शिवाजी के दमन के लिए दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया। 15 अप्रैल, 1663 को रात्रि के समय शिवाजी ने दुस्साहसपूर्ण अंजाम देते हुए शाइस्ता खाँ के पूना शिविर में घुसकर हमला कर दिया। शाइस्ता खाँ का अंगूठा कट गया, परन्तु वह वहाँ से भाग निकला।

16 जनवरी, 1664 को शिवाजी ने मुगलों के समृद्ध बन्दरगाह सूरत को लूटा। इससे मुगलों की प्रतिष्ठा को भारी धक्का लगा। क्रुद्ध औरंगज़ेब ने शाइस्ता खाँ को वापस बुला लिया और अपने राजपूत सेनापति जयसिंह को शिवाजी के दमन हेतु दक्कन भेजा। जयसिंह स्थितियों पर नियंत्रण करने में सफल रहा। उसने 24 जून, 1665 को शिवाजी को पुरन्दर की सन्धि के लिए बाध्य कर दिया।

पुरन्दर की सन्धि (1665 ई.)

इस संधि के अनुसार शिवाजी को अपने 33 में से 23 किले मुगलों को देने पड़े, तथा उनके पुत्र शम्भाजी को मुगल दरबार में 5000 का मनसब दिया गया तथा शिवाजी ने मुगलों की तरफ से बीजापुर के विरुद्ध युद्ध एवं सेवा करने का वचन दिया। इस सन्धि के बाद शिवाजी औरंगज़ेब से मिलने आगरा पहुँचे, किन्तु औरंगज़ेब ने उन्हें कैद कर लिया। शिवाजी किसी तरह वहाँ से भाग निकलने में सफल रहे।

शिवाजी का राज्याभिषेक

16 जून, 1674 को रायगढ़ किले में काशी के प्रसिद्ध विद्वान गंगाभट्ट द्वारा शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ और शिवाजी ने छत्रपति की उपाधि ली तथा हिन्दू धर्म की रक्षा का प्रण लिया। हैंदव धर्मोद्धारक व गौब्राह्मण प्रतिपालक की उपाधि धारण की। 1678 ई. में शिवाजी ने जिंजी का किला जीत लिया। इसे दक्षिणी भागों की राजधानी बनाया। शिवाजी की यह अन्तिम विजय थी।

शिवाजी का प्रशासन

शिवाजी और मराठों का प्रशासन मूलत: दक्कनी संरचना पर आधारित था। उनका साम्राज्य वस्तुत: दो भागों में विभक्त था। प्रथम भाग सीधे मराठों के अधीन था और स्वराज (मुल्क-ए-कदम) कहलाता था तथा द्वितीय भाग जो मुगलों अथवा बीजापुर के अधिकार में था, परन्तु शिवाजी (मराठे) वहाँ चौथ वसूलते थे।

केन्द्रीय शासन

मराठा शासन केन्द्रीय निरंकुश राजतंत्र था। प्रशासन में राजा की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद होती थी, जिसे अष्टप्रधान के नाम से जाना जाता था। अष्टप्रधान के आठ मंत्री थे, जो निम्न थे—

1. **पेशवा अथवा मुख्य प्रधान**—यह प्रधानमंत्री था तथा सम्पूर्ण राज्य के शासन की देखभाल करता था। सरकारी पत्रों पर राजा के नीचे इसकी मुहर लगती थी।
2. **अमात्य अथवा मजूमदार**—यह वित्त एवं राजस्व मंत्री था।
3. **वाकियानवीस अथवा मंत्री**—राजा तथा दरबार की प्रतिदिन की कार्यवाहियों की खबर रखता था।
4. **शुरूनवीस या सचिव**—राजकीय पत्र व्यवहार तथा परगने का हिसाब देखता था, इसे चिटनिस भी कहते थे।
5. **दबीर या सुमन्त**—विदेश मंत्री था।
6. **सर-ए-नौबत अथवा सेनापति**—सेना सम्बन्धी कार्य देखता था।
7. **पण्डितराव**—अनुदान से संबंधित था।
8. **न्यायाधीश**—राजा के बाद यह मुख्य न्यायाधिकारी था।

उपर्युक्त 8 मंत्रियों में न्यायाधीश व पण्डितराव को छोड़कर सभी मंत्रियों को सैनिक कार्यों व आक्रमणों में भाग लेना होता था।

प्रान्तीय प्रशासन

शिवाजी का राज्य चार प्रान्तों में बँटा हुआ था, इन प्रान्तों की दो श्रेणियाँ थीं—'स्वराज' और 'मुगलाई'। स्वराज शिवाजी के प्रत्यक्ष नियंत्रण में थे, जबकि मुगलाई प्रान्त शिवाजी द्वारा जीते गए, किन्तु मुगलों के अधिकार क्षेत्र में थे। प्रान्तों को तरफ या परगना में विभाजित किया गया था। एक परगना में कई गाँव होते थे। परगना का प्रशासक देशमुख कहलाता था। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई मौजा या गाँव होती थी, जिसकी व्यवस्था पटेल और ग्राम पंचायतें संभालती थीं।

सैन्य प्रशासन

शिवाजी के पास एक नियमित एवं स्थायी सेना थी। सेना का मुख्य भाग पैदल और घुड़सवार सेना थे। घुड़सवार सेना दो भागों में विभक्त थीं—

1. **बरगीर**—घुड़वासर सैनिक थे, जिन्हें राज्य की ओर से घोड़े और शस्त्र दिए जाते थे।
2. **सिलेदार**—स्वतंत्र सैनिक थे, जो अपना अस्त्र-शस्त्र स्वयं रखते थे।

किले मराठा सैन्य व्यवस्था के विशिष्ट लक्षण थे। किले में तीन अधिकारी होते थे—

1. **हवलदार**—पहाड़ी दुर्ग इसी के अधीन होते थे।
2. **सर-ए-नौबत**—सम्पूर्ण घुड़सवार सेना का प्रधान होता था।
3. **सरनबीस (ब्राह्मण)**—नागरिक (असैनिक) और राजस्व प्रशासन देखता था।

भू-राजस्व प्रशासन

शिवाजी के समय राजस्व के मुख्य स्रोत लगान, चुंगी एवं बिक्री कर तथा चौथ और सरदेशमुखी थे। चौथ एक प्रकार का सैनिक कर था, जिसे पड़ोसी राजाओं की सीमाओं, विजित क्षेत्रों अथवा प्रभाव के अंतर्गत आने वाले इलाकों से सैनिक सुरक्षा के बदले वसूला जाता था। इसमें आय का चौथा हिस्सा कर के रूप में लिया जाता था। सरदेशमुखी में वार्षिक आय का 1/10 हिस्सा वसूला जाता था। यह उन क्षेत्रों से लिया जाता था, जो मराठा राज्य को अपना प्रमुख मानते थे।

1677 ई. में अन्ताजी दत्तों के नेतृत्व में समूचे मराठा प्रदेश की जमीन का सर्वेक्षण करवाया गया और उसके आधार पर लगान की राशि को निर्धारित किया गया।

तालिका 13.1: महत्वपूर्ण प्रशासनिक अधिकारी

मजूमदार	आय-व्यय का निरीक्षक
मिरासदार	जमींदार
पाटिल या पटेल	ग्राम का या मुख्य अधिकारी था, जो कर संबंधी, न्यायिक तथा अन्य प्रशासनिक कार्य करता था।
कुलकर्णी (लेखपाल) चौगुले	भूमि का लेखा-जोखा रखता था। पटेल का सहायक तथा कुलकर्णी के लेखों की देखभाल करता था।
बारह बलूटे (शिल्पी)	ग्राम की औद्योगिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे।
मामलतदार एवं कामविसदार	गाँवों में कर निर्धारण पटेल के परामर्श से करते थे। इसके अतिरिक्त ये जिली में पेशवा के प्रतिनिधि होते थे। कामविसदार चौथ भी वसूलता था।
देशमुख	मामलतदार के ऊपर नियंत्रण रखते थे।
देशपाण्डे (जिलाधिकारी)	इनकी पुष्टि के बिना कोई लेखा स्वीकार नहीं किया जाता था

शिवाजी के उत्तराधिकारी

शम्भाजी (1680–1689 ई.)

शिवाजी की मृत्यु के बाद शम्भाजी छत्रपति बनने में सफल हुआ। उसने अपने मित्र कवि कलश को अपना सलाहकार बनाया। उसने औरंगज़ेब के विद्रोही पुत्र शहजादा अकबर (1681 ई.) को संरक्षण दिया। अत: औरंगज़ेब ने उसके विरुद्ध अभियान किया और 21 मार्च, 1689 को भीमा नदी के किनारे उसकी हत्या कर दी गई।

राजाराम (1689–1700 ई.)

शम्भाजी की मृत्यु के बाद मराठा सरदारों ने शिवाजी के द्वितीय पुत्र राजाराम को सिंहासन पर बैठाया। राजाराम ने मराठा सरदारों को जागीरें प्रदान की, जिसके परिणाम स्वरूप मराठा मण्डल या राजसंघ का उदय हुआ।

शिवाजी द्वितीय (1700–1707 ई.)

राजाराम की मृत्यु के बाद उसकी विधवा ताराबाई ने अपने चार वर्षीय पुत्र को शिवाजी द्वितीय नाम से मराठा राज सिंहासन पर बैठाया। ताराबाई के काल में मराठों का पुनरूत्थान हुआ। 1707 ई. में औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् शाहू ने ताराबाई को चुनौती दी और खेड़ा की लड़ाई में ताराबाई को पराजित कर मराठा छत्रपति बन गया।

शाहू (1707–1749 ई.)

शाहू का राज्याभिषेक 1708 ई. में सतारा में किया गया तथा वहीं उसकी राजधानी बनाई गई। 1731 ई. में शाहू ने विभिन्न मराठा सरदारों के सहयोग से ताराबाई के साथ आपसी संघर्ष को वारना की सन्धि द्वारा समाप्त किया। इसमें शाहू तथा राजाराम की दूसरी पत्नी से उत्पन्न हुआ पुत्र शम्भाजी द्वितीय के मध्य समझौता हुआ। समझौते के अनुसार उत्तरी क्षेत्र में सतारा को राजधानी बनाकर शाहू तथा दक्षिणी क्षेत्र में कोल्हापुर को राजधानी बनाकर शम्भाजी द्वितीय शासन करेंगे। 1708 ई. में शाहू ने बालाजी विश्वनाथ को सेनाकते (सैन्य व्यवस्थापक) पद पर आसीन किया एवं 1713 ई. में उसे पेशवा का पद प्रदान किया। पेशवा बालाजी बाजीराव तथा राजाराम द्वितीय के मध्य संगोला की सन्धि हुयी जिसके परिणाम स्वरूप (1750 ई.) पेशवा मराठा संघ का वास्तविक प्रधान बन गया।

पेशवाओं के काल में मराठा शक्ति का उत्कर्ष (Rise of Maratha in the Period of Peshwa)

पेशवाओं की शक्ति का अभ्युदय शाहू व राजाराम की विधवा पत्नी ताराबाई के मध्य चल रहे गृह युद्ध के दौरान हुआ।

बालाजी विश्वनाथ (1713–1720 ई.)

बालाजी विश्वनाथ एक ब्राह्मण था। उसने अपना जीवन एक छोटे राजस्व अधिकारी के रूप में प्रारंभ किया था। उसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर 1713 ई. में शाहू ने उसे पेशवा नियुक्त किया। 1719 ई. में बालाजी विश्वनाथ एवं सैयद हुसैन अली के बीच सन्धि हुई, जिसका मुख्य कारण फर्रूखसियर को गद्दी से हटाना था। बदले में मराठों को स्वराज्य क्षेत्र पर राजस्व अधिकारों को मान्यता दे दी गई। रिचर्ड टेम्पल ने इस संधि को मैग्नाकार्टा की संज्ञा दी है।

बाजीराव प्रथम (1720–1740 ई.)

बालाजी की मृत्यु के पश्चात् शाहू ने उसके पुत्र बाजीराव प्रथम को पेशवा नियुक्त किया। उसके अधीन मराठा शक्ति अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई। बाजीराव ने 7 मार्च, 1728 को पालखेड़ा के समीप निजाम को पराजित किया तथा उसके साथ मुंशी शिवगाँव की सन्धि की। इस सन्धि के अनुसार निजाम ने शाहू को चौथ तथा सरदेशमुखी देना, शम्भाजी को सहायता न देना, विजित प्रदेश लौटाना तथा बन्दी छोड़ देना स्वीकार किया। 1731 ई. में वारना की सन्धि द्वारा शम्भाजी द्वितीय ने शाहू की अधीनता स्वीकार कर ली।

भोपाल युद्ध के परिणामस्वरूप 1738 ई. में दुरईसराय की सन्धि हुई। इस सन्धि के तहत निजाम ने सम्पूर्ण मालवा का प्रदेश तथा नर्मदा से चम्बल के इलाके की पूरी सत्ता मराठों को सौंप दी। 1739 ई. में बेसीन की विजय बाजीराव की महान सैन्य कुशलता एवं सूझ-बूझ का प्रतीक थी। इस युद्ध में बाजीराव ने पुर्तगालियों से सालसेट तथा बेसीन छीन ली।

बालाजी बाजीराव (1740–1761 ई.)

बाजीराव की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बालाजी बाजीराव (नाना साहेब के नाम से प्रसिद्ध) गद्दी पर बैठा। इसके समय संगोला की संधि (1750) के द्वारा पेशवा तथा छत्रपति के बीच समझौता हुआ, जिसके द्वारा पेशवा का पद पैतृक बना दिया गया। सारे अधिकार अब पेशवा में समाहित कर दिए गए। अत: अब मराठा शक्ति का केन्द्र पूना हो गया।

पानीपत का तृतीय युद्ध (14 जनवरी, 1761 ई.)

मराठों और अफगानिस्तान के शासक अहमदशाह अब्दाली के मध्य पानीपत का तृतीय युद्ध हुआ। इस युद्ध में अहमदशाह अब्दाली विजयी हुआ और मराठे पराजित हुए। इस युद्ध में नजीबुद्दौला ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला, रूहेला सरदार हाफिज रहमत खाँ और सादुल्ला खाँ से अब्दाली को समर्थन दिलवाया। इस युद्ध का तत्कालिक कारण था, मराठों द्वारा उसके पंजाब के वायसराय तेंमूरशाह के निष्कासन का बदला लेना।

जाटों (सूरजमल), राजपूतों एवं सिक्खों ने भी मराठों का साथ नहीं दिया। मल्हार राव होल्कर युद्ध से भाग गया। इस युद्ध में पराजय को बालाजी सहन नहीं कर सका और 1761 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। पेशवा को पराजय की सूचना एक व्यापारी द्वारा कूट सन्देश के रूप में पहुँचाई गई जिसमें कहा गया कि, 'दो मोती विलीन हो गए, बाइस सोने की मुहरें लुप्त हो गई और चाँदी तथा ताँबे की तो पूरी गणना ही नहीं की जा सकती'।

माधवराव प्रथम (1761–1772 ई.)

पानीपत की लड़ाई में मराठों की हार तथा बालाजी की अकस्मात् मृत्यु के बाद उसका पुत्र माधवराव प्रथम पेशवा बना। उसने हैदराबाद के निजाम

और हैदरअली को चौथ देने के लिए बाध्य किया। 1772 ई. में क्षय रोग से माधवराव प्रथम की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बारे में ग्राण्ट डफ ने लिखा है—'मराठा साम्राज्य के लिए पानीपत का मैदान उतना घातक सिद्ध नहीं हुआ जितना कि इस श्रेष्ठ शासक का असामयिक देहावसान'।

नारायण राव (1772–1773 ई.)

माधवराव की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई नारायण राव पेशवा बना, किन्तु चाचा रघुनाथ राव ने स्वयं पेशवा बनने के लिए 1773 ई. में उसकी हत्या कर दी।

माधव नारायण राव (1774–1796 ई.)

पेशवा नारायण राव की हत्या कर रघुनाथ राव अंग्रजों की शरण में भाग गया, जबकि नया पेशवा माधव नारायण राव अल्पायु था, अत: मराठा राज्य के संचालन के लिए 12 सदस्यों की परिषद् का निर्माण हुआ जिसमें नाना फड़नवीस, सखाराम बापू, महादजी सिन्धिया जैसे प्रमुख सरदार शामिल थे।

प्रथम एंग्लो-मराठा युद्ध (1775–1782 ई.)

माधव नारायण राव के समय में प्रथम एंग्लो-मराठा युद्ध हुआ, जिसमें मराठों ने अंग्रेजों को बराबरी की टककर दी और अन्तत: शान्ति स्थापना हेतु 1782 ई. को सालबाई की सन्धि की गई। इस सन्धि का दूरगामी उद्देश्य मराठों और अंग्रेजों के बीच शांति स्थापित करना था।

पेशवा बाजीराव द्वितीय (1796–1818 ई.)

माधव नारायण की मृत्यु के पश्चात् राघोबा का पुत्र बाजीराव द्वितीय पेशवा बना। उसने जसवन्त होल्कर के भाई की हत्या करवा दी जिसके परिणामस्वरूप होल्कर ने उस पर आक्रमण कर दिया। अत: अपनी सुरक्षा हेतु उसने अंग्रेजों से 31 दिसम्बर, 1802 को बेसीन की सन्धि कर ली। इस सन्धि के तहत उसने अंग्रेजों का संरक्षण स्वीकार कर 60000 अंग्रेजी सेना को पूना में रखना स्वीकार किया। इस सेना के बदले उसने सूरत तथा 26 लाख वार्षिक आय वाला क्षेत्र अंग्रेजों को दे दिया। अपने विदेशी मामले कम्पनी के अधीन कर दिए तथा निजाम से चौथ वसूलने का अधिकार भी अंग्रेजों को सौंप दिया।

द्वितीय एंग्लो-मराठा युद्ध (1803–1806 ई.)

बेसीन की सन्धि का मराठा सरदारों ने तीव्र प्रतिरोध किया, अत: शीघ्र ही द्वितीय एंग्लो-मराठा युद्ध लड़ा गया। द्वितीय एंग्लो-मराठा युद्ध 1803-06 ई. के बीच में हुआ, जिसमें अलग-अलग मराठा सरदार एक-एक कर अंग्रेजों से पराजित हुए। इस प्रकार अब अंग्रेजों ने मराठों पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर दी। द्वितीय एंग्लो-मराठा युद्ध के पश्चात् अंग्रेजों ने भोंसले के साथ देवगाँव की सन्धि (1803 ई.), सिन्धिया के साथ सुरजी अर्जुनगांव की सन्धि (1803 ई.) तथा होल्कर के साथ राजपुर घाट की सन्धि (1804 ई.) की।

तृतीय एंग्लो-मराठा युद्ध (1817–18 ई.)

तृतीय एंग्लो-मराठा युद्ध में मराठा शक्ति अंग्रेजों से पूर्णत: पराजित हुई। 1818 ई. में पेशवा बाजीराव का अंग्रेजों के समक्ष समर्पण के साथ ही पेशवा पद समाप्त कर दिया गया तथा सतारा नामक एक पृथक राज्य बनाकर उसमें शिवाजी के वंशज को प्रतिष्ठित कर दिया गया।

अध्याय सार संग्रह

- सत्रहवीं शताब्दी में मराठा साम्राज्य की स्थापना शिवाजी ने की।
- मराठा शासन का संचालन अष्ट प्रधानों के द्वारा होता था। अष्ट प्रधानों की नियुक्ति स्वयं राजा करता था।
- पेशवा प्रधानमंत्री होता था। पेशवा बाजीराव प्रथम ने हिन्दू पद बादशाही के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
- पानीपत तृतीय युद्ध के समय मराठों का पेशवा माधव राव था।
- ग्रांट डफ ने कहा था 'मराठों को पानीपत के तृतीय युद्ध से जितना नुकसान नहीं हुआ', उससे ज्यादा माधव राव की मृत्यु से हुआ।
- 1737 में बाजीराव प्रथम ने दिल्ली पर आक्रमण कर बादशाह की सेना को परास्त किया।
- 1750 ई. में पेशवा तथा राजाराम द्वितीय के बीच संगोला की संधि हुई। इस संधि से मराठा संगठन का वास्तविक नेता पेशवा बन गया तथा मराठा राजनीति का केन्द्र पुणे हो गया।
- 1761 ई. में मराठों तथा अहमदशाह अब्दाली के बीच पानीपत का तीसरा युद्ध हुआ। उस युद्ध में मराठों की हार हुई।
- शिवाजी क गुरू समर्थ रामदास ने दासबोध नामक पुस्तक की रचना की थी।
- पेशवाओं के शासन काल में पुणे में स्थित मराठा प्रशासन का सचिवालय 'हुजूर दफ्तर' कहलाता था।
- शिवाजी ने शासन को संगठित बनाने के लिए साम्राज्य को प्रांतों, परगनों, गावों में बांट रखा था।
- माधव नारायण की मृत्यु के पश्चात राघोबा का पुत्र बाजीराव द्वितीय पेशवा बना।
- 1818 ई. में 'बाजीराव द्वितीय' को पराजित कर अंग्रजों ने पेशवा के पद को समाप्त कर दिया।

14 अध्याय

मुगल साम्राज्य का पतन

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- मुगल साम्राज्य के पतन के तत्कालीन और दीर्घकालीन कारण क्या थे। उनकी कौन सी ऐसी नीतियाँ थी, जिन्होंने विशाल मुगल साम्राज्य को पतन के रास्ते ला खड़ा किया।
- मुगल शासन के दौरान विभिन्न प्रांतीय स्वायत्त राज्यों जैसे— हैदराबाद, कर्नाटक, भरतपुर, पंजाब इत्यादि ने अपनी पहचान बनाये रखी।
- सिक्खों की कौन-कौन सी मिसलें थी तथा सिक्खें ने किस प्रकार मुगलों के विरूद्ध एकजुटता बनायी।

उत्तरवर्ती मुगल काल (Post-Mughal Era)

औरंगजेब की मृत्यु (1707 ई.) के पश्चात् भारतीय इतिहास में एक नवीन युग का पदार्पण हुआ, जिसे उत्तरवर्ती मुगलकाल के नाम से जाना जाता है। इस समय मुगल साम्राज्य में कुल 21 प्रान्त थे, जिनमें मुअज्जम काबुल, आजम गुजरात और कामबख्श बीजापुर का सूबेदार था। जाजौ में जून, 1707 ई. में लड़े गए उत्तराधिकार के युद्ध में विजय के साथ मुअज्जम, बहादुरशाह प्रथम की उपाधि के साथ दिल्ली के तख्त पर बैठा।

बहादुरशाह प्रथम (1707–1712 ई.)

65 वर्ष की अवस्था में बहादुरशाह प्रथम सम्राट बना। अपनी इस अवस्था में कठोर व दमनात्मक नीति का अनुसरण करने में वह सक्षम नहीं था। बहादुरशाह राजकीय कार्यों में इतना अधिक लापरवाह था कि उसे शाहे बेखबर के नाम से भी जाना जाता है। उसने अपने निजी सहायक मुनिम खाँ को वजीर नियुक्त किया। इसी प्रकार जुल्फिकार खाँ को सेना प्रमुख नियुक्त किया।

राजपूतों के प्रति अपनी नीति के तहत उसने आमेर की गद्दी पर से जयसिंह को हटाकर उसके छोटे भाई विजय सिंह को बिठाने और मारवाड़ के राजा अजीत सिंह को मुगल सत्ता की अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर करने की कोशिशें कीं। बहादुरशाह के दरबार में 1711 ई. में एक डच प्रतिनिधि शिष्ट मण्डल जोसुआ केटेलार के नेतृत्व में आया। इस शिष्ट मण्डल का दरबार में जोरदार स्वागत किया गया।

बहादुरशाह प्रथम ने औरंगजेब द्वारा लगाए गए जजिया कर की वसूली पर रोक लगा दी तथा सिक्खों के दसवें गुरू गोविन्द सिंह को सन्तुष्ट करने के लिए बादशाह ने गुरू के सम्मान में खिलअत तथा उच्च मनसब प्रदान किया था।

जहाँदारशाह (1712–1713 ई.)

बहादुरशाह की मृत्यु के बाद उसके बेटों, शाहजादा अजीमुषान, रफीउश्मान, जहाँनशाह तथा जहाँदारशाह के बीच गद्दी के लिए उत्तराधिकार युद्ध हुआ, जिसमें जुल्फिकार खाँ की सहायता से जहाँदारशाह गद्दी पर बैठा। जहाँदारशाह ने आमेर के राजा सवाई जयसिंह को मिर्जा की उपाधि के साथ मालवा का सूबेदार बनाया।

इसने मारवाड़ के अजीत सिंह को महाराजा की पदवी दी और गुजरात का सूबेदार बनाया। मराठा शासक को दक्कन का चौथ और वहाँ की सरदेशमुखी इस शर्त पर दे दी गई कि उसकी वसूली मुगल अधिकारी करेंगे और फिर मराठा अधिकारियों को दे देंगे।

जहाँदारशाह ने अपने धायभाई कोकलताश को महत्वपूर्ण पद दे दिया था। कोकलताश ने एक ऐसा संगठन तैयार किया, जिसका कार्य सम्राट की शक्तियों को उसी के हाथों में केन्द्रित रखने का था। जहाँदारशाह एक अयोग्य शासक था। जिस पर एक वेश्या लालकुँवर का अत्यधिक प्रभाव था। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए अजीमुश्शान के पुत्र फर्रूखसियर ने हिन्दुस्तानी अमीर सैयद बन्धुओं के सहयोग से जहाँदारशाह को सिंहासन से अपदस्थ करवा 11 फरवरी, 1713 को हत्या करवा दी।